नामसंकीर्तनयोग : खण्ड ३

नामजप कौनसा करें ?

(साधना की प्राथमिक अवस्था से लेकर अगली अवस्थाओं में किए जानेवाले नामजप)

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापना के उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

एवं पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

卐 सनातन के ग्रन्थों की भारत की भाषाओं के अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४५, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९९, हिन्दी १९६, गुजराती ६८, तेलुगु ५४, तमिल ४४, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

सितम्बर २०२४ तक ३६६ ग्रन्थों की १३ भाषाओं में ९७ लाख ५९ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थ के संकलनकर्ताओं का परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजी के आध्यात्मिक शोधकार्य का संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था' की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्ति के लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्ग की निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से २०.९.२०२४ तक १२८ साधकों को सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४३ साधक सन्तत्व की दिशा में अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयों पर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात' के संस्थापक-सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य)की स्थापना की उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका मार्गदर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन की ग्रन्थ-रचना की सेवा करने के साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्री के (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात' में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

(अध्यायों के कुछ विशेषतापूर्ण शीर्षक नीचे दिए हैं ।)

अध्याय १. जिज्ञासुओं के लिए उपयुक्त २ नामजप ९

१ अ. पितृदोष से (पूर्वजों की अतृप्ति से) रक्षा होने के लिए भगवान दत्तात्रेय का नामजप ९

१ आ. आध्यात्मिक उन्नति के लिए नामजप ११

१ इ. कुछ नामजपों का तुलनात्मक विवेचन १७

१ ई. नामजप करते समय मुद्रा एवं न्यास करने का महत्त्व १९

अध्याय २. अनिष्ट शक्तिजनित पीडा के निवारण हेतु नामजप २१

२ अ. अनिष्ट शक्ति क्या है ? २१

२ आ. अनिष्ट शक्तिजनित पीडा दूर करने की आवश्यकता २१

२ इ. अनिष्ट शक्तिजनित पीडा के कुछ लक्षण २१

२ ई. अनिष्ट शक्तिजनित पीडा के निवारण हेतु नामजप २३

२ उ. अनिष्ट शक्तिजनित पीडा के निवारण हेतु स्वभावदोष एवं अहं निर्मूलन करना महत्त्वपूर्ण २३

अध्याय ३. साधना की प्राथमिक अवस्था में किए जानेवाले नामजप २४

३ अ. अनिष्ट शक्ति से पीडाग्रस्त व्यक्ति के लिए नामजप २४

३ आ. अनिष्ट शक्ति की पीडा से रहित साधकों के लिए नामजप २६

अध्याय ४. साधना की आगे की अवस्थाओं में किए जानेवाले नामजप २७

४ अ. अनिष्ट शक्ति से पीडाग्रस्त जिज्ञासुओं के लिए नामजप २७

४ आ. अनिष्ट शक्ति की पीडा से रहित साधकों के लिए नामजप २९

अध्याय ५. नामजप के कुछ अन्य प्रकार ३१

५ अ. ईश्वर के निर्गुण रूप के प्रतीक 'ॐ' का जप ३१

५ आ. उद्देश्यानुसार नामजप करना ३३

५ इ. साम्प्रदायिक नामजप ४४

५ ई. कुछ पन्थों के नामजप ४८

५ उ. प्रान्त एवं भाषा के अनुसार नामजप ४९

५ ऊ. कुछ सन्त, मुनि एवं भक्तों का नामजप ५०

५ ए. स्वप्न में (स्वप्नदृष्टान्त में) मिला नामजप ५०

अध्याय ६. विविध नामजपों के परिणाम एवं उन नामजपों की परमेश्वर से एकरूप करने की क्षमता ५१

६ अ. कुछ देवताओं के नामों का प्रभाव ५१

६ आ. नामजप के अर्थानुसार प्रभाव ५६

६ इ. विभिन्न नामों की विभिन्न देहों की स्पन्दनसंख्या से अनुरूपता तथा परमेश्वर से एकरूप करने की क्षमता ५७

अध्याय ७. नामजप के विषय में शंकासमाधान ५८

卐 संकलनकर्ताओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य जानकारी ६०

भूमिका

'कलियुग में नामजप, ईश्वरप्राप्ति करने का सर्वोत्तम साधन है', ऐसा अनेक सन्तों ने कहा है । कुछ लोग कुछ वर्ष प्रयत्नपूर्वक नामजप करने का प्रयास करते हैं । अनुभूति के अभाव में वे सोचते हैं, 'नामजप में कोई अर्थ नहीं' और उनका अध्यात्म से विश्वास उठ जाता है । वे नहीं जानते कि दोष नामजप में नहीं है, उन्होंने जो नामजप चुना है, वह उनकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए उचित नहीं है; इसलिए उन्हें अनुभूति नहीं होती ।

'गुरु अथवा अध्यात्म के अधिकारी व्यक्ति यदि हमारे जीवन में नहीं आए हों, तो निश्चित रूप से कौनसा उचित नाम लेना चाहिए ?' ऐसा प्रश्न सामान्य लोगों के मन में आना स्वाभाविक ही है । उन्हें इस ग्रन्थ द्वारा मार्गदर्शन मिलेगा । जिज्ञासु एवं नामजप-साधना आरम्भ करने के इच्छुक व्यक्तियों द्वारा किए जानेवाले नामजप के सम्बन्ध में इस ग्रन्थ में बताया गया है ।

'अनिष्ट शक्ति' अर्थात कष्टदायक सूक्ष्म-देह (लिंगदेह) । काल-महिमा के अनुसार वर्तमान सूक्ष्म संकटकाल में अनिष्ट शक्तियों के कष्ट की मात्रा अत्यधिक बढ गई है । लगभग प्रत्येक मनुष्य को ही न्यून -अधिक मात्रा में अनिष्ट शक्तियों के कष्ट हो रहे हैं । उन कष्टों के कारण मनुष्य का जीवन समस्यामय एवं दुःखी बनता है तथा ठीक से साधना भी नहीं होती । इसलिए 'अनिष्ट शक्तियों के कष्टों के निवारण के लिए कौनसा नामजप करना चाहिए ?', इसका मार्गदर्शन भी इस ग्रन्थ में किया है ।

जिस प्रकार विद्यालय में आगे की कक्षा में अगले चरण की पढाई होती है, उसी प्रकार नामजप-साधना की अगली अवस्था में अलग-अलग नामजप करने पड सकते हैं । इससे साधक की साधना अच्छी होती है तथा उसकी आध्यात्मिक उन्नति भी शीघ्र होने में सहायता मिलती है । इस सम्बन्ध में भी प्रस्तुत ग्रन्थ अनमोल मार्गदर्शन करता है ।

इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थ में नामजप के कुछ अन्य प्रकार, उदा. 'ॐ' का नामजप, इच्छापूर्ति करनेवाले देवता का नामजप, इन्द्रियों का कार्य सुधारने के लिए इन्द्रियों के देवताओं का नामजप तथा साम्प्रदायिक नामजप की मर्यादा, नामजप के होनेवाले परिणाम आदि जानकारी भी दी गई है ।

यह ग्रन्थ पढकर आवश्यक नामजप कर सभी शीघ्र आध्यात्मिक उन्नति करें', यह श्री गुरुचरणों में प्रार्थना है ।' – **संकलनकर्ता**

संस्कृत भाषानुरूप हिन्दी भाषा के प्रयोग हेतु सनातन की समर्थक भूमिका !

संस्कृत देवभाषा है । सनातन संस्था उसे आदर्श मानती है । मूलतः संस्कृत ही हिन्दी भाषा की जननी है । अतः सनातनके ग्रन्थोंमें –

१. शब्दों के नीचे बिन्दु (नुक्ता) नहीं दिया जाता ।

२. शुद्ध (संस्कृतनिष्ठ) हिन्दी का उपयोग किया जाता है । पाठकों की सुविधा के लिए कठिन शब्दों के आगे कोष्ठक में वैकल्पिक अन्य भाषा के शब्द का उल्लेख किया जाता है ।

३. हिन्दी राष्ट्रभाषा होने के कारण विविध प्रान्तों में एक ही अर्थ में एक से अधिक शब्द प्रचलित होते हैं । अनेक बार शब्द की वर्तनी में अन्तर होता है । इन कारणों से पाठकों को भाषा कठिन अथवा अशुद्ध प्रतीत न हो, इस हेतु ग्रन्थ में विभिन्न स्थानों पर हमने कोष्ठक में वैकल्पिक शब्द देने का प्रयास किया है; तथापि पृष्ठसंख्या बढने के भय से प्रत्येक बार ऐसा करना सम्भव नहीं ।

– (सच्चिदानंद परब्रह्म) डॉ. जयंत आठवले